**E-ISSN:** 2706-8927
**P-ISSN:** 2706-8919
www.allstudyjournal.com
IJAAS 2025; 7(1): 85-88
Received: 12-10-2024
Accepted: 15-11-2024

**प्रशान्त कुमार वत्स**
शोध छात्र शिक्षा, अवधेश प्रताप सिंह वि.वि., रीवा, मध्य प्रदेश, भारत

**डॉ. विवेक कुमार मिश्रा**
प्राचार्य, मनोज जैन मेमोरियल कॉलेज, सतना, मध्य प्रदेश, भारत

**Corresponding Author:**
**प्रशान्त कुमार वत्स**
शोध छात्र शिक्षा, अवधेश प्रताप सिंह वि.वि., रीवा, मध्य प्रदेश, भारत

# सतना जिले के माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् विद्यार्थियों में सामाजिक जागरुकता एवं संवेगात्मक स्तर पर सहसम्बन्ध का अध्ययन

**प्रशान्त कुमार वत्स, विवेक कुमार मिश्रा**

**DOI:** https://doi.org/10.33545/27068919.2025.v7.i1b.1335

**सारांश**
प्रस्तुत शोध कार्य में माध्यमिक स्तर में अध्ययनरत विद्यार्थियों में सामाजिक जागरुकता एवं संवेगात्मक स्तर पर सहसम्बन्ध का अध्ययन सुनियोजित रूप से किया गया गया है। न्यादर्श में सम्भाव्य न्यादर्श विधि का प्रयोग किया गया है इसके लिए माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् विद्यार्थियों द्वारा आंकड़ों का संग्रहण किया गया है। सामाजिक जागरुकता ज्ञात करने के लिए स्वनिर्मित प्रश्नावली व संवेगात्मक स्तर ज्ञात करने के लिए डॉ. अनीता सोनी एवं डॉ. अशोक सोनी द्वारा निर्मित मापनी का प्रयोग किया गया है। माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों में सामाजिक जागरुकता एवं संवेगात्मक विकास में सार्थक सहसम्बन्ध है और इसी प्रकार छात्र एवं छात्राओं में सामाजिक जागरुकता एवं संवेगात्मक विकास में सार्थक सहसम्बन्ध पाया गया है।

**कुटशब्दः** सतना जिला, माध्यमिक विद्यालय, विद्यार्थी, सामाजिक जागरुकता एवं संवेगात्मक स्तर

## 1. प्रस्तावना
सामाजिक जागरूकता विद्यार्थियों के लिए एक आवश्यक कौशल है क्योंकि यह उन्हें दूसरों के दृष्टिकोण, भावनाओं और जरूरतों को समझने और उनका सम्मान करने में सक्षम बनाता है। यह समावेशिता, सहानुभूति और सकारात्मक सामाजिक संपर्क को बढ़ावा देता है, जो उनके व्यक्तिगत और शैक्षणिक विकास के लिए महत्वपूर्ण हैं।

किसी बच्चे के सामाजिक विकास में विद्यालय महत्वपूर्ण भूमिका निर्वहन करते हैं। घर की ही भाँति विद्यालय के तत्त्वों का भी प्रभाव बच्चे की सामाजिकता पर पड़ता है। वास्तव में घर और विद्यालय, माता–पिता और शिक्षक इन दोनों में बहुत अधिक अन्तर नहीं किया जा सकता। दोनों का उद्देश्य बच्चे का समुचित सामाजिक एवं नैतिक विकास करना होता है। विद्यालय में मुख्यतः जिन दो तत्त्वों का प्रभाव बच्चे के ऊपर प्रत्यक्ष रूप से पड़ता है, वे हैं – शिक्षक और बच्चे के मित्र। अच्छे शिक्षक सदा बच्चे के सम्मुख अनुकरणीय उदाहरण प्रस्तुत करते हैं और कक्षा के भीतर बच्चे के व्यक्तित्व के विकास के लिए सुन्दर से सुन्दर वातावरण उत्पन्न करते हैं। विद्यालयों में साथियों के साथ भी मिल–जुलकर बच्चे अनेक सामाजिक गुणों को ग्रहण करते हैं। नेतृत्व और सहकारिता के गुणों का विकास विद्यालय के वातावरण में ही होता है। विद्यालय हमारे समाज का एक ऐसा अंग है जहाँ बच्चे अपनी ही आयु के अनेक बच्चों के साथ मिलने और कार्य करने का अवसर पाता है। प्रिय और अप्रिय सभी प्रकार के अनुभवों को वह मित्रों के सम्पर्क में आकर वहीं प्राप्त करते हैं और इस प्रकार भावी जीवन के लिए विद्यालय में उचित ढ़ंग से तैयारी करते है।

विद्यालय एक ऐसा महत्वपूर्ण कारक है, जो बच्चे के सामाजिक विकास सम्बन्धी कुछ महत्वपूर्ण तत्वों को प्रभावित करते है। विद्यालय से वंचित बच्चों का सामाजिक विकास काफी प्रभावित होता है, जो आगे चलकर बच्चे के व्यक्तित्व को पर्याप्त रूप से प्रभावित करती है। इस तरह के बच्चों को समाज विरोधी आपराधिक गतिविधियों में लिप्त होने में ज्यादा समय नहीं लगता या ऐसे बच्चे कुण्ठित होकर एकांकी जीवन व्यतीत करने लगते हैं। इनका राष्ट्र के, समाज के, अपने परिवार के एवं स्वयं के विकास में कोई रुचि नहीं रह जाती है। यह राष्ट्र पर बोझ स्वरूप हो जाते हैं।

संवेगात्मक स्तर एक आन्तरिक योग्यता होती है जिसके द्वारा व्यक्ति में संवेगों को महसूस करने, समझने एवं उनका प्रभावपूर्ण नियन्त्रण करने की क्षमता का विकास होता है। जिसके द्वारा व्यक्ति अपने संवेगों को पहचानता है, संवेगों का उचित प्रकटीकरण करता है तथा दूसरों के संवेगो को समझकर उसके सामने वैसा ही व्यवहार करता है। संवेगात्मक स्तर से तात्पर्य व्यक्ति की अपनी भावनाओं तथा दूसरों की भावनाओं की पहचान कर सकने की क्षमता से है, जिसकी सहायता से वह अपने को अभिप्रेरित कर सके और अपने अन्दर पाए जाने वाले संवेगों एवं उनके आधार पर बने

सम्बन्धों को ठीक से व्यवस्थित कर सके। अतः संवेगात्मक स्तर वह क्षमता होती है जिसके द्वारा व्यक्ति अपने संवेगों तथा व्यवहार को नियन्त्रित करके एक कुशल व्यक्ति के रूप में प्रस्तुत होता है।

## 2. अध्ययन की आवश्यकता

प्रस्तावित शोध समस्या जो कि माध्यमिक स्तर में अध्ययनरत विद्यार्थियों में सामाजिक जागरुकता एवं संवेगात्मक स्तर पर सहसम्बन्ध का अध्ययन इसमें शोध की आवश्यकता व महत्व गहन रूप से है। शिक्षा व्यक्ति को बाल्यावस्था से वृद्धावस्था तक निरंतर जीवन जीने में सहायता करती है। अपने आप को परिवर्तित करके स्वयं को प्रगति की ओर ले जाने की दिशा शिक्षा से ही मिलती है। समाज की बदलती आवश्यकताओं के अनुसार समय व स्थान का चयन मनुष्य शिक्षा के माध्यम से ही कर पाता है तथा उचित निर्णय ले सकता है। समाज में शिक्षित वहीं माना जाता है जो शिक्षित के समान व्यवहार करें अर्थात शिक्षा मूल प्रवृत्तियों से युक्त पशुवत् प्राणी का व्यवहार परिवर्तित कर उसे समाज का सक्रिय, सम्माननीय सदस्य बनाती है। जिस प्रकार शारीरिक विकास के लिए भोजन का महत्व है उसी प्रकार सामाजिक विकास के लिए शिक्षा का। मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है उसकी मूल प्रवृत्तियों में कार्य शिक्षा ही करती है जिससे व्यक्ति समाज सम्मत व्यवहार सीखता है। यह समाज सम्मत व्यवहार ही समाज के विकास का आधार बनाता है। प्रस्तुत समस्या के अन्तर्गत कक्षा 9 व 10वीं के छात्र–छात्राओं में सामाजिक जागरुकता एवं संवेगात्मक स्तर पर सहसम्बन्ध का अध्ययन सुनियोजित रूप से किया गया है।

## 3. उद्देश्य

अतः प्रत्येक क्रिया का कुछ उद्देश्य अवश्य होता है बिना उद्देश्य के विभिन्न प्रकार कठिनाईयों का सामना करना पड़ता है। इन्हीं उद्देश्यों को ध्यान में रखकर शोध कार्य किया जाता है। प्रस्तुत शोध प्रबन्ध में निम्नलिखित उद्देश्य है –

1. माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों में सामाजिक जागरुकता एवं संवेगात्मक विकास में सहसम्बन्ध का अध्ययन करना।
2. माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत छात्रों में सामाजिक जागरुकता एवं संवेगात्मक विकास में सहसम्बन्ध का अध्ययन करना।
3. माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत छात्राओं में सामाजिक जागरुकता एवं संवेगात्मक विकास में सहसम्बन्ध का अध्ययन करना।

## 4. शोध की परिकल्पनाएँ

1. माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों में सामाजिक जागरुकता एवं संवेगात्मक विकास में कोई सार्थक सहसम्बन्ध नहीं है।
2. माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत छात्रों में सामाजिक जागरुकता एवं संवेगात्मक विकास में सार्थक सहसम्बन्ध है।
3. माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत छात्राओं में सामाजिक जागरुकता एवं संवेगात्मक विकास में सार्थक सहसम्बन्ध है।

## 5. शोध समस्या का सीमांकन

प्रस्तावित शोध कार्य का क्षेत्र सतना जिला है। इसके अन्तर्गत 8 विकासखण्ड – सतना (सोहावल), मझगवाँ, रामपुर बघेलान, नागौद, उचेहरा, अमरपाटन, रामनगर एवं मैंहर है। अतः जिला अन्तर्गत स्थित माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् बालक–बालिकाओं में हो रहे संवेगात्मक विकास का अध्ययन किया गया।

## 6. अध्ययन विधि

- **सर्वेक्षण अध्ययन विधिः** सर्वेक्षण अनुसंधान का एक महत्वपूर्ण अंग है। इसके द्वारा शोध समस्या के विभिन्न पक्षों से सम्बन्धित आंकड़ों का संग्रहण किया जाता है। आंकड़े मुख्य तथा वर्तमान स्तर का निर्धारण, वर्तमान स्तर की मान्य स्तर से तुलना, तथा वर्तमान स्तर को विकसित करने में महत्वपूर्ण उपादान होते हैं। सर्वेक्षण में व्यक्ति की अपेक्षा तथ्यों, परिस्थितियों तथा गणनाओं को प्राथमिकता दी जाती है।
- **साख्यिकीय विधिः** सर्वेक्षण विधि से प्राप्त ऑकड़ो का वर्गीकरण एवं सारणीयन किया गया है। जिनकी व्याख्या एवं विश्लेषण हेतु, सांख्यकीय विधियॉ प्रयोग में लाई गयी है। प्रस्तुत शोधकार्य में परिकल्पनाओं का परीक्षण सांख्यकीय विधियों द्वारा करने के लिये– '$r^2$' Test का प्रयोग किये गये है, साथ ही गुणात्मक विश्लेषण पर भी ध्यान रखा गया हैं।

## 7. शोध उपकरण

शोधार्थी ने माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् विद्यार्थियों में सामाजिक जागरुकता ज्ञात करने लिए स्वनिर्मित प्रश्नावली व संवेगात्मक विकास ज्ञात करने के लिए डॉ. अनीता सोनी व डॉ. अशोक शर्मा द्वारा निर्मित उपकरण का प्रयोग किया गया है।

## 8. पूर्व अध्ययन समीक्षा

पूर्ववर्ती अध्ययन से तात्पर्य अनुसंधान की समस्या से सबन्धित उन सभी प्रकार की पुस्तकों, ज्ञान कोशों, पत्र–पत्रिकाओं, शोध पत्रों तथा अभिलेखों आदि से है, जिनके अध्ययन से अनुसंधानकर्ता को अपनी समस्या के चयन, परिकल्पनाओं के निमार्ण, अध्ययन की रूपरेखा तैयार करने तथा कार्य को आगे बढ़ाने में सहायता मिलती है इनमें से मुख्य रूप से वर्मा, कविता एवं शर्मा, पुष्पलता (2011)[1], आहुजा (2001)[2], चौबे, एस.पी. (2003)[3], वर्मा एवं श्रीवास्तव (1992)[4], सिंह तिवाड़ी, राज्यश्री (2023)[5], पाण्डेय, जितेन्द्र कुमार (2007)[6], पाठक, पी.डी. (2007)[7], कुमारी, शांत्वना (2017)[8] और चौहान, धीरेन्द्र एवं द्विवेदी, डॉ. संतोष कुमार (2023)[9] ने शोध विधि एवं संवेगात्मक विकास से सम्बन्धित कार्य किये है।

**समष्टि व प्रतिदर्शः** माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् बालक–बालिकाओं में हो रहे संवेगात्मक विकास का अध्ययन करने के लिए न्यादर्श के रूप में चयनित प्रत्येक विकासखण्ड से एक शहरी व एक ग्रामीण माध्यमिक विद्यालयों कुल 16 माध्यमिक विद्यालय, प्रत्येक विद्यालय से 10 छात्र एवं 10 छात्राएं कुल 320 छात्रों का चयन दैव निदर्शन पद्धति से अध्ययन हेतु किया गया है। इस प्रकार यह अध्ययन दोनों दृष्टियों से सैद्धान्तिक एवं अनुभवाश्रित परिपूर्ण होगा।

## 9. सतना जिले का सामान्य परिचय

सतना जिला भारत के मानचित्र में 23.58º-25.12º उत्तरी अक्षांश तथा 80.12º-81.23º पूर्वी देशान्तर पर स्थित है। जिले का भौगोलिक क्षेत्रफल 7424 वर्ग कि.मी. है जो प्रदेश के क्षेत्रफल का 1.78 प्रतिशत है। सतना मध्य रेल्वे के इलाहाबाद और कटनी जंक्शन के बीच एक प्रमुख रेल्वे स्टेशन एवं व्यापारिक, औद्योगिक नगर है। जिले में एक नगर निगम (सतना), एक नगरपालिका (मैहर) के अतिरिक्त 9 नगर पंचायते क्रमशः नागौद, अमरपाटन, रामपुर बघेलान, कोठी, जैतवारा, कोटर, विरसिंहपुर, उचेहरा एवं चित्रकूट हैं।

## 10. परिणामों का विश्लेषण एवं व्याख्या

शोधार्थी द्वारा किया गया कोई भी शोध कार्य सही अर्थों में तभी प्रतिबिम्बित होता है, जब शोधार्थी द्वारा उस समस्या की वास्तविक स्थिति का मूल्यांकन किया जाय। इसके लिये यह आवश्यक है, कि शोधार्थी द्वारा शोध अध्ययन में उपयेाग किये

गये समस्त शोध उपकरणों द्वारा प्राप्त जानकारियों को व्यवस्थित क्रम में सारणीबद्ध किया जाय, निम्नानुसार है–

**परिकल्पना क्र. 1** माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों में सामाजिक जागरुकता एवं संवेगात्मक विकास में कोई सार्थक सहसम्बन्ध नहीं है।

**सारणी क्रमांक 1:** माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों में सामाजिक जागरुकता एवं संवेगात्मक विकास में सहसम्बन्ध का अध्ययन

| चर | विद्यार्थियों की संख्या | सहसम्बन्ध | मुक्तांश |
|---|---|---|---|
| सामाजिक जागरुकता एवं संवेगात्मक विकास | 320 | 0.997 | 318 |

0.05 स्तर पर आर का मान 0.113

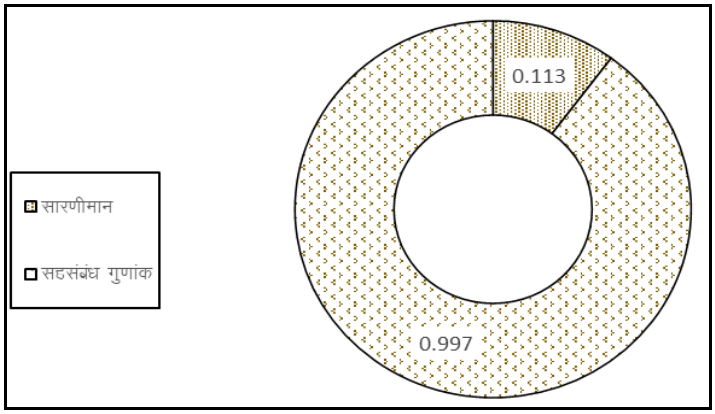


**आरेख 1:** माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों में सामाजिक जागरुकता एवं संवेगात्मक विकास में सहसम्बन्ध का अध्ययन

### 10.1 विश्लेषण

सारणी एवं आरेख क्रमांक 1 के अवलोकन से यह ज्ञात होता है, कि शोध क्षेत्र के माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों में सामाजिक जागरुकता एवं संवेगात्मक विकास में सार्थक सहसम्बन्ध 'आर' का मान 0.997 एवं 'डीएफ' 318 है। यह 'आर' तालिका के 0.05 से अधिक है। इसलिए 'आर' का मूल्य सार्थक होने की वजह से परिकल्पना अस्वीकृत हो जाती है। अतः यह स्पष्ट होता है कि शोध क्षेत्र के माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों में सामाजिक जागरुकता एवं संवेगात्मक विकास में सार्थक सहसम्बन्ध है। अतः यह परिकल्पना निरसित होती है।

**परिकल्पना क्र. 2:** माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत छात्रों में सामाजिक जागरुकता एवं संवेगात्मक विकास में सार्थक सहसम्बन्ध है।

**सारणी क्रमांक 2:** माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत छात्रों में सामाजिक जागरुकता एवं संवेगात्मक विकास में सहसम्बन्ध का अध्ययन

| चर | छात्रों की संख्या | सहसम्बन्ध | मुक्तांश |
|---|---|---|---|
| सामाजिक जागरुकता एवं संवेगात्मक विकास | 160 | 0.882 | 158 |

0.05 स्तर पर आर का मान 0.159

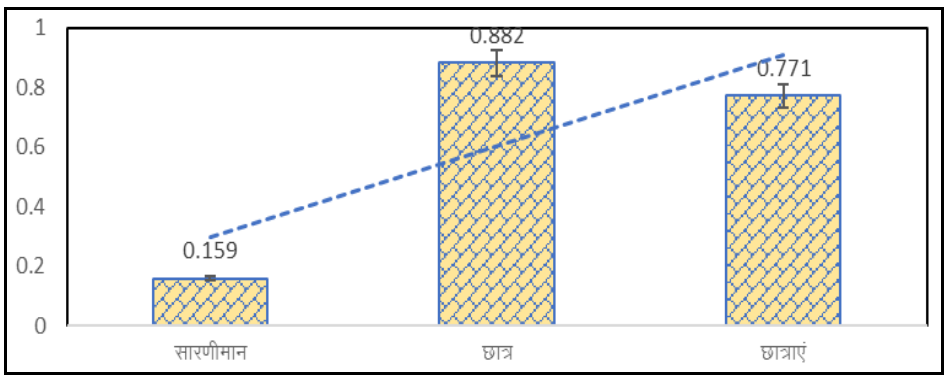


**आरेख:** माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत छात्रों में सामाजिक जागरुकता एवं संवेगात्मक विकास में सहसम्बन्ध का अध्ययन

### 10.2 विश्लेषण

सारणी एवं आरेख क्रमांक 2 के अवलोकन से यह ज्ञात होता है, कि शोध क्षेत्र के माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत छात्रों में सामाजिक जागरुकता एवं संवेगात्मक विकास में सहसम्बन्ध 'आर' का मान 0.882 एवं 'डीएफ' 158 है। यह 'आर' तालिका के 0.05 से अधिक है। इसलिए 'आर' का मूल्य सार्थक होने की वजह से परिकल्पना स्वीकृत हो जाती है। अतः यह स्पष्ट होता है कि शोध क्षेत्र के माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत छात्रों में सामाजिक जागरुकता एवं संवेगात्मक विकास में सहसम्बन्ध में सार्थक सहसम्बन्ध है। अतः यह परिकल्पना सत्यापित होती है।

**परिकल्पना क्र. 3:** माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत छात्राओं में सामाजिक जागरुकता एवं संवेगात्मक विकास में सार्थक सहसम्बन्ध है।

**सारणी क्रमांक 3:** माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत छात्राओं में सामाजिक जागरुकता एवं संवेगात्मक विकास में सहसम्बन्ध का अध्ययन

| चर | छात्रों की संख्या | सहसम्बन्ध | मुक्तांश |
|---|---|---|---|
| सामाजिक जागरुकता एवं संवेगात्मक विकास | 160 | 0.771 | 158 |

0.05 स्तर पर आर का मान 0.159

### 10.3 विश्लेषण

सारणी क्र. 3 एवं आरेख क्रमांक 2 के अवलोकन से यह ज्ञात होता है, कि शोध क्षेत्र के माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत छात्राओं में सामाजिक जागरुकता एवं संवेगात्मक विकास में सहसम्बन्ध 'आर' का मान 0.771 एवं 'डीएफ' 158 है। यह 'आर' तालिका के 0.05 से अधिक है। इसलिए 'आर' का मूल्य सार्थक होने की वजह से परिकल्पना स्वीकृत हो जाती है। अतः यह स्पष्ट होता है कि शोध क्षेत्र के माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत छात्राओं में सामाजिक जागरुकता एवं संवेगात्मक विकास में सहसम्बन्ध में सार्थक सहसम्बन्ध है। अतः यह परिकल्पना सत्यपित होती है।

## 11. निष्कर्ष

अनुसंधान के परिणामों से प्राप्त निष्कर्ष निम्नानुसार है–

- शोध क्षेत्र के माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों में सामाजिक जागरुकता एवं संवेगात्मक विकास में सार्थक सहसम्बन्ध है।
- शोध क्षेत्र के माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत छात्रों में सामाजिक जागरुकता एवं संवेगात्मक विकास में सहसम्बन्ध में सार्थक सहसम्बन्ध है।
- शोध क्षेत्र के माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत छात्राओं में सामाजिक जागरुकता एवं संवेगात्मक विकास में सहसम्बन्ध में सार्थक सहसम्बन्ध है।

## 12. सन्दर्भ ग्रंथ


1. वर्मा, कविता एवं शर्मा, पुष्पलता – विद्यार्थियों की सामाजिक परिपक्वता पर लिंग, परिवेश एवं सामाजिक वर्ग का अन्तः क्रियात्मक प्रभाव, परिप्रेक्ष्य, वर्ष 18, अंक 2, राष्ट्रीय शैक्षिक योजना एवं प्रशासन विश्वविद्यालय, नई दिल्ली, 2011
2. आहुजा, राम – सोशल प्रोब्लम्स इन इंडिया, रावत पब्लिकेशन्स, जयपुर, 2001.
3. चौबे, एस.पी. – हिस्ट्री ऑफ इंडियन एजुकेशन, विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा–2, 2003.
4. वर्मा, प्रीति एवं श्रीवास्तव, डी.एन. – आधुनिक समाज मनोविज्ञान, 1992.
5. तिवाड़ी, राज्यश्री – सामाजिक एवं भावनात्मक शिक्षा, International Journal of Education, Modern Management, Applied Science & Social Science (IJEMMASSS), 2023 April – June; Volume 05:02(III):123-126.
6. पाण्डेय, जितेन्द्र कुमार – भारत में आधुनिक शिक्षा का प्रसारः दशा और दिशा, कुरुक्षेत्र मासिक पत्रिका, ग्रामीण विकास मंत्रालय, भारत सरकार, नई दिल्ली, 2007, वर्ष 53, अंक 11, पृ. 7–9.
7. पाठक, पी.डी – भारतीय शिक्षा और उसकी समस्यायें इक्कीसवाँ संस्करण, विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा 2007.
8. कुमारी, शांत्वना – स्कूलीय शिक्षा का बच्चों के सामाजिक, मानसिक एव ं शारीरिक विकास पर प्रभाव एक अध्ययन, International Journal of Applied Research. 2017;3(1):896-898.
9. चौहान, धीरेन्द्र एवं द्विवेदी, डॉ. संतोष कुमार – रीवा जिले के उच्चतर माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् विद्यार्थियों के संवेगात्मक बुद्धि एवं शैक्षिक उपलब्धि के मध्य सहसम्बन्ध का अध्ययन, International Journal of Literacy and Education. 2023;3(2): 94-97